RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 45, अंक : 40 एक प्रति 2 : रुपये

कुल पृष्ठ : 8

रविवार 5 जनवरी, 2020

विक्रमी सम्वत् 2076, सृष्टि सम्वत् 1960853120

दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये

आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726

E-mail: apspunjab2010@gmail.com,

www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–45, अंक : 40, 2-5 जनवरी 2020 तदनुसार 21 पौष, सम्वत् 2076 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

ऋषि दयानन्द का सदेश वेदों का प्रचार प्रसार कर रहा है आर्य समाज: सुदर्शन शर्मा

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर का 27वां वार्षिकोत्सव व 51 कुंडीय चतुर्वेद परायण महायज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पूर्णाहुति डालते हुये मुख्य यजमान श्री विनीत आर्य, जया आर्या, सुभाष आर्य एवं इन्दु आर्या जी एवं चित्र दो में मुख्य अतिथि जया आर्या एवं विनीत आर्य को सम्मानित करते हुये। चित्र तीन में कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री सुदर्शन शर्मा जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब आर्य जनों को सम्बोधित करते हुये। उनके साथ खड़े हैं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी, चौधरी ऋषिपाल सिह जी आर्य जबकि चित्र चार में उपस्थित जनसमूह। चित्र पांच में ध्वजारोहण करते हुये जया आर्या जी एवं प्रधान श्री रणजीत आर्य जी ध्वजारोहण करते हुये।

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर का 27वां वार्षिकोत्सव व 51 कुंडीय चतुर्वेद परायण महायज्ञ सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि जया आर्य अहमदाबाद ने ओ३म की पताका फहरा कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। महायज्ञ के मुख्य यजमान श्री विनीत आर्य एवं जया आर्य, श्री सुभाष आर्य एवं इन्दु आर्य, अभिषेक बसंदराय एवं शैली बसंदराय, हरविन्द्र सिंह बेदी, रविन्द्र कौर वेदी, निशांत बसंदराय एवं दिव्या आर्य बसंदराय, रोहित अग्रवाल एवं श्रीमती अर्चना अग्रवाल, सुरेन्द्र कालिया डीआईजी एवं श्रीमती किरण वालिया, ध्रुव मित्तल एवं स्वतंत्र कुमार मुरगई मुख्य यजमान के अतिरिक्त 100 यजमान परिवारों ने आहुतियां प्रदान कर इस यज्ञ को सम्पन्न किया। इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा पंडित सुरेश शास्त्री जी, गुरुकुल के विद्यार्थियों ने पवित्र पावन वेद मंत्रों से महायज्ञ सम्पन्न करवाया। आचार्य देव आर्य जी ने ईश्वर भक्ति के भजन और सोनू भारती ने महर्षि दयानन्द जी के भजन सुना कर सब को मंत्रमुग्ध कर दिया। स्वामी चैतन्य मुनि जी ने बहुत ही सुन्दर यज्ञ की महिमा के बारे में बताया। आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया। वेदों में ईश्वर का स्वरूप इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सुदर्शन शर्मा जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने की। सम्मानीय अतिथि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी, उप प्रधान श्री स्वतंत्र कुमार जी मुरगई, उप प्रधान चौधरी ऋषिपाल सिंह एडवोकेट, उप प्रधान श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा, (**शेष पृष्ठ 7 पर**)

उच्छिष्ट ब्रह्म एवं वेद का प्रलय विज्ञान

ले.-डॉ. आचार्य सूर्यादेवी चतुर्वेदा

इस जगत् के 3 महत्वपूर्ण अनादि व नित्य पदार्थ हैं-ईश्वर, जीव, प्रकृति। परमेश्वर ब्रह्म जीव के लिये प्रकृति से सृष्टि को उत्पन्न करता है। सृष्टि को उत्पन्न कर उसका स्थापन, पालन, रक्षण भी ईश्वर ही करता है। सृष्टि को उत्पन्न करने वाला ईश्वर ही अन्त में उसका प्रलय भी करता है।

एक सृष्टि के रहने का समय 4 अरब 32 करोड़ वर्ष है। उतना ही समय 4 अरब 32 करोड़ वर्ष सृष्टि के प्रलय का है।

सृष्टि की स्थिति के काल में जीव प्रकृति के पदार्थों को भोगकर प्रसन्न होता रहता है, नाना सुख सुविधाओं को प्राप्त कर सुख, समृद्धि अर्जित करता रहता है।

उच्छिष्ट ब्रह्म

सृष्टिकर्ता, स्रष्टा,परमेश्वर ब्रह्म के अनादि, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक आदि अनेक महत्वपूर्ण स्वरूप हैं। उन महत्वपूर्ण स्वरूपों में एक उच्छिष्ट स्वरूप भी है।

उच्छिष्ट शब्द व्युत्पत्ति व अर्थ

उच्छिष्ट शब्द उत् पूर्वक चुरादिगणीय शिष असर्वोपयोगे धातु से क्त प्रत्यय करने पर सिद्ध होता है। उच्छिष्ट शब्द की व्युत्पत्ति है-

यः उच्छिष्यते प्रकृष्टरूपेण तिष्ठति स उच्छिष्टः।

अर्थात् जिसका सम्पूर्णता से उपयोग न हुआ हो, प्रकृष्ट रूप से स्थित हो, वह उच्छिष्ट कहा जाता है।

लोक में उच्छिष्ट शब्द

लोक में उच्छिष्ट शब्द पुल्लिंग, नपुंसकलिंग 2 प्रकार का है। पुल्लिंगवाची उच्छिष्ट शब्द शेष, बचा हुआ, अस्वीकृत, त्यक्त, बासी, पुराने विचार, आविष्कार आदि अर्थों में प्रयुक्त होता है।

नपुंसकवाची उच्छिष्ट शब्द जूठन, खण्ड, अवशिष्ट, भोक्तावशेष अर्थो में प्रयुक्त है।

ईश्वर पक्ष में उच्छिष्ट शब्द के शेष, बचा हुआ, आविष्कार, अवशिष्ट ये अर्थ ही घटेंगे।

ईश्वर उच्छिष्ट क्यों?

ईश्वर को उच्छिष्ट क्यों कहते हैं?

1. क्योंकि जब सृष्टि का प्रलय होता है, तब दृश्य जगत् के जड़ चेतन पदार्थ सृष्टिकाल में जिस अस्तित्व में रहते हैं, उस अस्तित्व से रहित हो जाते हैं। पर परमात्मा जिस सत् चित् आनन्द स्वरूप में होता है, उसी स्वरूप में रहता है, अतः वह उच्छिष्ट कहाता है।

2. अन्यच्च सृष्टि निर्माण की जो ईश्वरीय शक्ति है, उस शक्ति का 1/4 भाग ही सृष्टि निर्माण में दृष्टिगोचर होता है, 3/4 भाग अदृश्य ही रहता है। अदृश्य शक्ति भाग उस परमेश्वर में ही समाहित होता है। उसके ज्ञान आदि का 3/4 भाग अप्रयुक्त है, इस कारण ईश्वर उच्छिष्ट कहाता है।

ईश्वर के इस उच्छिष्ट=ईश्वर शक्ति के असर्वोपयोग रहस्य का तथ्य वेद में निर्दिष्ट है। मन्त्र है-

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पुरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।
यजु. 31/3।।

इस मन्त्र का तथ्य महर्षि दयानन्द ने यजुर्वेद भाष्य के भावार्थ में प्रकट किया है-

यह सब सूर्य चन्द्रादि लोकलोकान्तर चराचर जितना जगत् है। वह सब चित्र विचित्र रचना के अनुमान से परमेश्वर के महत्व को सिद्ध कर उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय रूप से तीनों काल में घटने बढ़ने से भी परमेश्वर के चतुर्थांश में ही रहता है, किन्तु इस ईश्वर के चौथे अंश की भी अवधि को नहीं पाता और इस ईश्वर के सामर्थ्य के तीन अंश अपने अविनाशी मोक्षास्वरूप में सदैव रहते हैं। इस कथन से उस ईश्वर का अनन्तपन नहीं बिगड़ता किन्तु जगत् की अपेक्षा उसका महत्त्व और जगत् का न्यूनत्व जाना जाता है।

महर्षि दयानन्द, यजु. 31/3।।

महर्षि दयानन्द के इस कथन से स्पष्ट है कि ईश्वर के चतुर्थ भागरूप सामर्थ्य का ही यह जगत् परिचायक है। उसके सामर्थ्य के 3 अंश ईश्वर के मोक्षस्वरूप में ही स्थिर रहते हैं।

यह तथ्य आचार्य शंकर ने भी वेदान्त दर्शन के शास्त्रयोनित्वात् वेदा. 1/1/3 सूत्र में अभिव्यक्त किया है।

सृष्टि के समय जिस प्रकार जगत् के सभी नामात्मक=ज्ञानात्मक चारों वेद एवं रूपात्मक=प्राकृतिक जगत् के पदार्थ परमेश्वर में स्थिर रहते हैं, उसी प्रकार प्रलय अवस्था में भी नामात्मक एवं रूपात्मक जगत् परमेश्वर में स्थित रहता है।

प्रलयकालीन जगत् के पदार्थ की अवस्थिति का एवं परमेश्वर के उच्छिष्ट स्वरूप का वर्णन अति विस्तार से अथर्ववेद के 11वें काण्ड के 7वें सूक्त में किया गया है। इस सूक्त में 27 मन्त्र हैं। 1-22 मन्त्रों तक प्रलयकालीन पदार्थों की अवस्थिति का वर्णन है। 23 से 27 मन्त्रों तक अर्थात् 5 मन्त्रों में पुनः सृष्टयुत्पत्ति=नामात्मक, रूपात्मक जगत् की उत्पत्ति का प्रकथन है।

सूक्त के प्रथम मन्त्र में नामरूपं च कहकर नामात्मक एवं रूपात्मक जगत् की प्रलयकालीन अवस्था का प्रतिपादन है। मन्त्र है-

उच्छिष्टे नाम रूपं चोच्छिष्टे लोक आहितः।
उच्छिष्ट इन्द्रश्चाग्निश्च विश्वमन्तः समाहितम्।।
अथर्व. 11/7/1।।

अर्थात् उच्छिष्टे=प्रलय में उत्कृष्ट शक्तिरूप से विद्यमान अवशिष्ट परमेश्वर में, नामरूपम्= ज्ञानात्मक एवं रूपात्मक जगत् स्थित रहता है, च= और, उच्छिष्टे= उस उत्कृष्ट सामर्थ्य वाले परमेश्वर में, लोकः= लोक लोकान्तर, आहितः= स्थिर रहते हैं, उच्छिष्टे= उच्छिष्ट परमेश्वर में, च= और, इन्द्रः= विद्युत्, च= और, अग्निः= अग्नि तत्व स्थित रहता है एवं उस उच्छिष्ट के, अन्तः= अन्दर, विश्वम्= समस्त पदार्थ मात्र, समाहितम्= सम्यक्, रूपेण स्थित रहता है।

तात्पर्य हुआ प्रलय में परमेश्वर, जीव एवं प्रकृति शेष रहते हैं। जीवात्मा निःचेष्ट रहता है, प्रकृति अपने अनुत्पादक स्वरूप में रहती है। प्रलय के उस काल में परमेश्वर जीवों एवं प्रकृति का निरीक्षण एवं नियन्त्रण करता हुआ होता है। इस वैशिष्ट्य के कारण जीवों व प्रकृति से परमात्मा, उत्=उत्कृष्ट कहा जाता है। इस विशेषता वाला परमात्मा ही उच्छिष्ट=उत्कृष्ट अभिहित होता है। प्रलय में परमेश्वर सृष्टि स्थिति के समान अपने सत्, चित्, आनन्द स्वरूप में ही स्थिर रहता है।

अथर्ववेद के इस 7वें सूक्त के अग्रिम 2-22 मन्त्रों तक विभिन्न नाम लेकर यह प्रतिपादन हुआ है कि प्रलयकाल में जल, समुद्र, चन्द्र, वायु, द्युलोक, पृथिवीलोक आदि सभी पदार्थ उस परमात्मा में ही स्थित रहते हैं।

ऋक्, यजु, साम, अथर्व चतुर्वेदात्मक ज्ञान भी परमेश्वर में स्थिर रहता है।

उच्छिष्ट बह्म से ही प्रलय को पश्चात् सृष्टि

दृश्य सृष्टि के सभी पदार्थ प्रलयकाल में परमात्मा में स्थित हो जाते हैं। 4 अरब 32 करोड़ वर्ष बाद पुनः सृष्टि क्रम आने पर उन सभी द्यौलोक, पृथिवी लोक आदि जल, समुद्र, चन्द्र, वायु आदि पदार्थों को प्रति सृष्टि की भाँति उच्छिष्ट ब्रह्म उत्पन्न करता है। मन्त्र है-

यच्च प्राणति प्राणेन यच्च पश्यति चक्षुषा।
उच्छिष्टाज्जज्ञिरे सर्वे दिवि देवा दिविश्रितः।।
अथर्व. 11/7/23।

अर्थात् यत् च=जो और प्राणी वर्ण, प्राणेन=प्राण वायु द्वारा, प्राणति=प्राण धारण करता है, यत् च=और जो प्राणी धर्म, चक्षुषा=आँख द्वारा, पश्यति=देखता है एवं, सर्वे देवाः=सब देव, सूर्य आदि, दिवि=जो कि द्युलोक में स्थित हैं, दिविश्रितः=जिनका द्युलोक आश्रय है, वे सब प्रलय के पश्चात्, उच्छिष्टात्=प्रकृति व जीव से भिन्न अपने स्वभाव में स्थित उस परमेश्वर से, जज्ञिरे=उत्पन्न होते हैं।

तात्पर्य स्पष्ट है प्रलय के पश्चात् उच्छिष्ट परमेश्वर ब्रह्म पूर्व की भाँति सभी पदार्थों की उत्पत्ति कर देता है।

वेद भी उच्छिष्ट से उत्पन्न

सभी पदार्थ जैसे उच्छिष्ट से उत्पन्न होते हैं, वैसे ही वेद भी उच्छिष्ट विशेषण वाले परमेश्वर से उत्पन्न होते हैं। मन्त्र है-

ऋचः सामानि च्छन्दांसि पुराणं

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सम्पादकीय

आर्य जगत् के लौहपुरूष–स्वामी स्वतन्त्रानन्द

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज वीतराग सन्यासी होते हुए भी आर्य समाज के कर्मठ सेनानी थे। जिन पुण्यात्माओं को जन्म देकर यह भारत भूमि धन्य हो गई है, उन पुण्यात्माओं में स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज भी एक थे। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्म विक्रम सम्वत् 1934 के पौष मास की पूर्णिमा को मोही ग्राम जिला लुधियाना में एक प्रतिष्ठित सिख जाट परिवार में हुआ था। बालक केहरसिंह का जन्म सन् 1877 ई. में उस समय हुआ जब महर्षि दयानन्द जी महाराज वेद ज्ञान की अमृत धारा को प्रवाहित करते हुए लुधियाना नगर पधारे। उस समय कौन जानता था कि यह बालक बड़ा होकर महर्षि दयानन्द का अनुयायी बनकर अपना जीवन अर्पण कर देगा। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जीवन त्याग, तप, सरलता और संयम का प्रतीक था। उनकी करनी और कथनी में भेद नहीं था। उनका व्यक्तिगत जीवन सामान्य व्यक्तियों के लिए ही नहीं अपितु त्यागी, तपस्वी महात्माओं के लिए भी अनुकरणीय जीवन था।

भारत भूमि को ऋषियों, मुनियों की धरती होने का गौरव प्राप्त है। हमारे देश में समय-समय पर अनेक ऋषियों, महापुरूषों तथा वीरों ने जन्म लिया। उन्होंने अपने धर्म तथा देश के लिए कार्य किया, अपना बलिदान दिया और इस संसार में अमर हो गए। उनके तप और त्याग के कारण आज भी हम उन्हें श्रद्धा से याद करते है। आर्य सन्यासियों में यदि किसी वीतराग, तपस्वी, परदु:खकातरता, तुरीयाश्रमी को लौह पुरूष की संज्ञा दी जा सकती है तो इसके वास्तविक अधिकारी स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज हैं।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्म एक सिख परिवार में हुआ। लुधियाना जिले के मोही गांव में इनका जन्म हुआ। पंजाब भूमि को यह गौरव प्राप्त है कि यहां पर महर्षि दयानन्द के गुरू दण्ड़ी स्वामी विरजानन्द ने जन्म लिया। स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाज पतराय, स्वामी दर्शनानन्द आदि इसी पंजाब की धरती पर पैदा हुए। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्म संवत् १९३४ के पौष मास की पूर्णिमा को सरदार भगवान सिंह नामक एक सिख के घर इस महापुरूष ने जन्म लिया। जिस समय बालक केहरसिंह का जन्म हुआ उस समय स्वामी दयानन्द जी महाराज वैदिक धर्म का प्रचार करने के लिए लुधियाना पधारे हुए थे। उस समय इस बात को कौन जानता था कि सिख घराने में पैदा हुआ यह बालक महर्षि दयानन्द की वाटिका को सींचेगा। उनका बचपन का नाम केहर सिंह था। बालक केहर सिंह की आरम्भिक शिक्षा ग्राम मोही में हुई। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज की रूचि बचपन में ही आध्यात्मिक ग्रन्थों में थी। इसके लिए उन्होंने संस्कृत का अभ्यास किया। वे छोटी आयु में वेदान्त दर्शन का अध्ययन करते रहे। उस समय में प्रचलित कुरीतियों के कारण स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को बचपन में गृहस्थ के बन्धनों में बाँध दिया गया। किन्तु यह दैवी संयोग ही था कि उनकी पत्नी का देहांत हो गया। इससे पहले कि उन्हें दोबारा गृहस्थ के बन्धन में बाँधा जाता , वे वैराग्य पथ के पथिक बन गए और उन्होंने गृहत्याग कर दिया।

केहरसिंह के ननिहाल गांव लताला में उदासीन सम्प्रदाय के एक मठ में पं. विशनदास नामक आर्य विद्वान् रहते थे। इनके सम्पर्क में आने से केहरसिंह भी आर्य विचारधारा में दीक्षित हो गए। अब उन्होंने अध्ययन और सत्संग को ही जीवन का लक्ष्य बना लिया इसलिए वे इधर-उधर भ्रमण करते रहते थे। २३ वर्ष की आयु में केहरसिंह ने सन्यास की दीक्षा ले ली और प्राणपुरी नाम धारण किया। साधु प्राणपुरी में अब संस्कृत पढ़ने की अदम्य प्रेरणा जागृत हुई। उन्होंने अमृतसर में स्वामी स्वरूपदास से कुछ समय के लिए वेदान्त तथा न्यायदर्शन पढ़े। उन दिनों स्वामी स्वतन्त्रानन्द अपने शरीर पर मात्र कौपीन ही धारण करते थे और पात्र के रूप में एक बाल्टी रखते थे। लोग उनको बाल्टी वाले साधु के नाम से पुकारने लगे। उनकी स्वतन्त्र प्रकृति के कारण लोग उन्हें स्वामी स्वतन्त्रानन्द कहने लगे और बाद में वे इसी नाम से प्रसिद्ध हो गए।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी प्रतिदिन नियम से योगाभ्यास करते थे और वेद का स्वाध्याय किया करते थे। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी की जीवनचर्या निश्चित थी। उनमें यह एक विशेष गुण था कि चाहे कितने ही दिन क्यों न बीत जाए वे दोपहर का भोजन 12 बजे के बाद नहीं करते थे। रात्रि के समय 8 बजे के बाद दूध नहीं पीते थे। वे भोजन स्वाद के लिए नहीं, अपितु शरीरयात्रा के लिए करते थे। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी लगातार वेद प्रचार करते थे। न केवल व्याख्यानों के द्वारा, अपितु पारस्परिक बातचीत द्वारा भी। पंजाब, सिंध और बलोचिस्तान, कश्मीर और दिल्ली का कोई स्थान ऐसा नहीं था जहां उनके भाषण न हुए हों। इसके अतिरिक्त सारे भारत की पदयात्रा और प्रचार किया। इसके साथ ही मारीशस द्वीप, अफ्रीका, थाइलैण्ड़ आदि अनेक देशों में वैदिक धर्म का प्रचार किया।

राष्ट्र सेवा में भी स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी अग्रगण्य थे। लार्ड हार्डिंग के ऊपर गोला फैंका गया तब भी उनकी जांच की गई थी। पंजाब में अंग्रेज गवर्नर पर भी गोली चलाए जाने वाले लोगों के साथियों में उनका नाम लिया गया था। लोहारू में जब आर्य समाज के जलूस पर मुसलमानों से शस्त्रों सहित आक्रमण किया तब स्वामी जी सबसे आगे थे। मुसलमानों ने लाठी कुल्हाड़ी आदि हथियारों से स्वामी जी पर प्रहार किए, परन्तु स्वामी जी अड़िग रहे। इस अड़िग भाव को देखकर मुसलमान भाग गए। वहां के पुलिस अधिकारी ने अपनी गवाही में कहा था कि यदि स्वामी जी लाठी उठा लेते तो न जाने क्या हो जाता। स्वामी जी ने इतना ही कहा हम साधु हैं- तुमने रोटी नहीं दी सोटी दी हमारे लिए कोई अन्तर नहीं। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी जितने बलवान थे उतने ही शान्त थे।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी जहां भी गए अपने पांवों के निशान छोड़ते गए। उन्होंने हैदराबाद सत्याग्रह का संचालन जिस योग्यता व कर्मठता से किया उसके कारण देश में तो क्या विदेश में भी उनकी धाक् जम गई। सर्वत्र उनकी योग्यता का गुणगान होने लगा। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने सब अवस्था को भांपकर तैयारी आरम्भ कर दी थी। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने दूसरों की भावनाओं का हमेशा सम्मान किया किन्तु अपनी विचारधारा नहीं छोड़ी। अत: लोहारू में हुए हमले से सिर में तीन इंच गहरा घाव हुआ तो पैदल चलकर स्टेशन पहुंचे। सिलाई के समय क्लोरोफार्म नहीं लिया तथा पुन: शीघ्र लोहारू जा पहुंचे। परिणामस्वरूप नवाब को झुकना पड़ा। पंजाब के मालेरकोटला में तो आपका नाम सुनते ही मन्दिर के ताले खोल दिए गए। 1935 में स्वामी स्वतन्त्रानन्द के कारण ही लाहौर में बूचड़खाना नहीं खुल सका जिसे बाद में पठानकोट में लगाने की योजना बनी। इस पर एक मुसलमान ने लिखा था कि अंग्रेज सरकार को यह समझ लेना चाहिए कि टक्कर किससे है? यह टक्कर उसी तेजस्वी, प्रतापी, वीर आर्य नेता से है जो अभी-अभी हैदराबाद रियासत को पाठ पढ़ाकर आया है। यह फकीर नहीं तेजस्वी पुरूष है जो कदम आगे धरकर पीछे हटाना नहीं जानता। सरकार बुद्धिमत्ता से कार्य ले नहीं तो पछताना पड़ेगा।

ऐसे वीर तेजस्वी, तपस्वी, त्यागी संत स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्मदिवस 10 जनवरी 2020 को आ रहा है। ऐसे लौहपुरूष का जन्मदिवस मनाते हुए हम उनके जीवन से त्याग तथा कर्मठता के गुणों को ग्रहण करके अपने जीवन में धारण करने का प्रयास करें। स्वामी जी तप व त्याग की प्रतिमूर्ति थे। हम भी स्वामी स्वतन्त्रानन्द के जीवन से शिक्षा लेकर मानवता के पथ प्रदर्शक बनें और देश हित के कार्य करें तथा आर्य समाज को एक नई दिशा देने का प्रयत्न करें।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

स्वामी सूर्यदेव जी नहीं रहे

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के आर्य वीर दल के अधिष्ठाता एवं महर्षि योग आश्रम गोनियाना मंडी के प्रमुख समाज सेवी स्वामी सूर्यदेव जी का देहान्त हो गया। गरीब कन्याओं के विवाह करवाने, गौ सेवा, पर्यावरण बचाने के साथ साथ जरूरतमंदों की सेवा करने में अग्रणी रहे स्वामी सूर्यदेव जी के देहावसान से आर्य जगत को भारी आघात पहुंचा है। स्वामी सूर्यदेव जी का शव छत्त में लगी पंखा टांगने वाली खूटी के साथ उनके केसरिया परने के फंदे में लटका हुआ मिला। डी.एस.पी. के.एस.भुल्लर का कहना है कि आश्रम में सी.सी.टी.वी. कैमरे लगे हैं लेकिन इसमें हैरानी वाली बात यह है कि रिकार्डिंग वाली डी.वी.आर. आश्रम से गायब है। यह मामले में कई तरह की आशंका पैदा कर रही है जिसमें गहराई से जांच की जा रही है। स्वामी सूर्यदेव जी पिछले 18 साल से गोनियाना स्थित आश्रम में रह रहे थे। वह मुख्य रूप से दिल्ली के रहने वाले थे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब उनके निधन पर गहरा शोक व्यक्त करती है। परमपिता परमात्मा उनकी आत्मा को शांति व सद्गति प्रदान करे और अपने पवित्र चरणों में स्थान दें। उनके निधन से आर्य जगत की अपूरणीय क्षति हुई है।

प्रेम भारद्वाज, सभा महामंत्री

देवयज्ञ से लाभ

शिवनारायण उपाध्याय, शास्त्री नगर, दादाबाड़ी-कोटा

वैदिक धर्म में पंचयज्ञों का महत्वपूर्ण स्थान है। पांच यज्ञों के नाम हैं-ब्रह्मयज्ञ (सन्ध्या वन्दन), देव यज्ञ (अग्निहोत्र), पितृ यज्ञ, (माता-पिता, पितामह-पितामहि आदि जीवित पितृ गणों की सेवा, अतिथि यज्ञ किसी वेद विद्वान् तपस्वी, जितेन्द्रिय पुरूष के एकाएक आने पर उनके भोजन, आराम आदि की व्यवस्था करना) तथा बलीवैश्वदेवयज्ञ (गाय, कुत्तें, चिटियां आदि को अन्न-पानी देना)। ब्रह्म यज्ञ और देव यज्ञ का वर्णन तो चारों वेदों के अतिरिक्त ब्राह्मण ग्रन्थों, मीमांसा दर्शन, कल्पसूत्रों, धर्म सूत्र, गृह्य सूत्र, वाल्मीकि रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थों में हुआ है। वाल्मिकीय रामायण में राम और लक्ष्मण को बार-बार संध्या और अग्निहोत्र करते हुए दिखाया गया है। रामायण में वर्णन है महर्षि विश्वामित्र के साथ जाते हुए वे अयोध्या से डेढ़ योजन दूरी पर सरयू नदी के तट पर उन्होंने रात्रि व्यतीत की तथा प्रातः सूर्योदय से पूर्व ऋषि ने दोनों भाइयों को जगाते हुए कहा, '**उत्तिष्ठनर शार्दुल कर्त्तव्यं दैवमाह्नि कम्।** उठो और प्रतिदिन किये जाने वाले देव संबंधी कार्यों को पूर्ण करो। तब दोनों भाई उठे और शौच स्नान आदि से निवृत्त होकर **स्नात्वा कृतोदकौ वीरौ जेपतुः परमं जपम्।।** तब नर श्रेष्ठ दोनों वीरों ने स्नान करके देव यज्ञ कर गायत्री मंत्र का जप किया। इसी प्रकार वन गमन के समय पहली रात्रि एक पेड़ के नीचे व्यतीत की। उस पेड़ नीचे पहुंच कर उन्होंने पहले संध्या की।'

स तं वक्षं क्षमा साद्य सन्ध्यामन्वास्य पश्चिमाम्।

इसी प्रकार महाभारत में भी कई स्थानों पर श्रीकृष्ण को संध्या और अग्निहोत्र करते हुए दिखाया गया है। महाभारत उद्योग पर्व अध्याय 447 में बताया गया है कि जब श्रीकृष्ण कौरव-पाण्डवों में संधि कराने हेतु दूत के रूप में जा रहे थे तब व एक रात वृकस्थल नामक गांव में संध्या समय पहुंचे। वहां उन्होंने रथ से उतर कर नियमानुसार शौचादि नित्य कर्म किया और रथ छोड़ने की आज्ञा देकर संध्या वंदन किया। हस्तिनापुर में वे विदुर के यहां ठहरे। फिर प्रातः काल उठकर श्रीकृष्ण ने स्थान, जप और अग्निहोत्र से निवृत्त हो उदित होते हुए सूर्य का उप स्थान किया। (उद्योग पर्व अध्याय 456) स्वामी दयानन्द सरस्वती ने पञ्च महायज्ञों पर अधिक बल दिया। साथ ही उन्होंने अग्निहोत्र को धार्मिक क्षेत्र से हटा कर पर्यावरण शुद्धि की और मोड़ दिया। सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में वे इस विषय पर इस प्रकार लिखते हैं-

प्रश्न-होम से क्या उपकार होता है?

उत्तर-सब लोग जानते हैं कि दुर्गन्ध युक्त वायु और जल से रोग, रोग से प्राणियों को दु:ख और सुगन्धित वायु और जल से आरोग्य और रोग के नष्ट हो जाने से सुख प्राप्त होता है।

प्रश्न-चंदन आदि घिस कर लगाने से वा घृतादि से खाने से बड़ा उपकार होता। अग्नि में डालकर व्यर्थ नष्ट करना बुद्धिमानों का काम नहीं।

उत्तर-जो तुम पदार्थ विद्या जानते तो कभी ऐसी बात न कहते। क्योंकि किसी द्रव्य का अभाव नहीं होता। देखो। जहां होम होता है वहां से दूर देश में स्थित पुरूष के नासिका में सुगन्ध का ग्रहण होता है। वैसे दुर्गन्ध का भी इतने से ही समझ लो कि अग्नि में डाला हुआ पदार्थ सूक्ष्म होकर फैल कर वायु के साथ दूर देश में जाकर, दुर्गन्ध की निवृत्ति करता है।

प्रश्न-जब ऐसा ही है तो केसर, कस्तुरी, सुगन्धित पुष्प और इत्र आदि के घर में रखने से वायु सुगन्धित होकर सुखकारक होगा।

उत्तर-उस सुगन्ध में वह सामर्थ्य नहीं है कि गृहस्थ वायु को बाहर निकाल कर शुद्ध वायु को प्रकाश करा सके। क्योंकि उसमें भेदक शक्ति नहीं है और अग्नि का सामर्थ्य है कि उस वायु और सुगन्धित पदार्थ को छिन्न-भिन्न और हल्का करके निकाल कर पवित्र वायु को प्रवेश करा दे।

प्रश्न-क्या होम करने के बिना पाप होता है?

उत्तर-हां। क्योंकि जिस मनुष्य के शरीर से जितना दुर्गन्ध उत्पन्न होकर वायु और जल को बिगाड़ कर रोगोत्पत्ति निभित्त होने से प्राणियों को दु:ख प्राप्त कराता है उतना ही पाप उस मनुष्य को होता है। इसलिए उस पाप के निवारणार्थ उतना सुगन्ध वा उससे अधिक वायु और जल में फैलाना चाहिए। खाने-पिलाने से एक को लाभ होता है। यजुर्वेद तो यज्ञों का ही वेद माना जाता है उसमें विभिन्न प्रकार के यज्ञों का वर्णन हुआ है। प्रथम अध्याय मंत्र संख्या 2 से ही चर्चा है।

वसो पवित्रमसि द्यौरसि पृथिव्यसि मातरिश्वानो धर्मोऽसि विश्वा धाऽसि

परमेण द्याम्ना दृ॑हस्व मा ह्वार्माते यज्ञपतिह्वर्षी।। यजु. 1.2

स्वामी दयानन्द सरस्वती वेद भाष्य में लिखते हैं, 'मनुष्य लोग अपनी विद्या और उत्तम क्रिया से जिस यज्ञ का सेवन करते हैं उससे पवित्रता, पृथ्वी का राज्य, वायु रूपी प्राण के तुल्य राजनीति, प्रताप, सबकी रक्षा, इस लोक और परलोक में सुख की वृद्धि, परस्पर कोमलता से बर्तना और कुटिलता का त्याग इत्यादि श्रेष्ठ गुण उत्पन्न होते हैं इसलिए सब मनुष्य को परोपकार तथा अपने सुख के लिए विद्या और पुरूषार्थ के साथ प्रीति पूर्वक यज्ञ का अनुष्ठान नित्य करना चाहिए।'

इस मंत्र में ही यज्ञ के कई महत्वपूर्ण लाभ गिना दिये गये हैं।

वसोः पवित्रमसि शत धारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्।

देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेणशतधारेण सुप्वा-कामधुक्षः।।

यजु. अ. मं. 3

(वसोः) यज्ञ (शतधारम्) असंख्यात संसार का धारण करने और (पवित्रम्) शुद्धि वाला कर्म (असि) है तथा जो (वसोः) यज्ञ (सहस्त्रधारम्) अनेकों प्रकार के ब्रह्माण्ड को धारण करने और (पवित्रम्) शुद्धि का निमित्त (असि) है (त्वा) उस यज्ञ को (देवः) स्वयं प्रकाश स्वरूप (सविता) वसु आदि तैतीस देवों का उत्पति करने वाला परमेश्वर (पुनातु) पवित्र करे। हे जगदीश्वर। आप हम लोगों सेवित (वसोः) जो यज्ञ है उस (पवित्रेण) शुद्धि के निमित्त वेद के विज्ञान (शतधारेण) बहुत विद्याओं के कारण करने वाले वेद अर (सुप्वा) अच्छी प्रकार पवित्र करने वाले यज्ञ से हमें पवित्र कीजिए। हे जिज्ञासु पुरूष। तू (काम्) वेद की श्रेष्ठ वाणियों में से कौन-कन वाणी के अभिप्राय को (अधुक्षः) जानना चाहता है। फिर यज्ञ से होने वाले लाभों के विषय में मंत्र संख्या 12 में कहा गया है-

पवित्रे स्थो वेष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसुव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभिः।

देवीरापोऽ अग्रेगुवोऽअग्रेप-वोऽग्रइममद्य यज्ञं नयताग्रे यज्ञपति सधातुं यज्ञपतिं देवयुवम्।। यजु. 1.12

भावार्थ-जो पदार्थ संयोग से विकार को प्राप्त होते हैं वे अग्नि के निमित्त से अति सूक्ष्म परमाणुरूप होकर वायु के बीच रहा करते हैं और कुछ शुद्ध भी हो जाते हैं परन्तु जैसी यज्ञ के अनुष्ठान से वायु और वृष्टि जल की उत्तम शुद्धि और पुष्टि होती है वैसी दूसरे उपाय से कभी नहीं हो सकती। इसके विद्वानों को चाहिए कि होम क्रिया और वायु, अग्नि, जल आदि के द्वारा शिल्प क्रिया से अच्छी-अच्छी सवारी बना कर अनेक प्रकार के लाभ उठावें।

यजुर्वेद अध्याय 2 मंत्र संख्या 23 में यज्ञ न करने वाले के विषय में कहा है-

करूत्वा विमुञ्चति स त्वामिमुञ्चति कस्मै त्वा विमुञ्चति तस्मै त्वा विमुञ्-चति। पोषाय रक्षसा भागोसि।।

(कः) कौन पुरूष (त्वा) उस यज्ञ को (विमुञ्चति) छोड़ता है? कोई नहीं। (त्वा) उसको (जो यज्ञ छोड़ता है) (सः) वह परमेश्वर भी (विमुञ्चति) छोड़ देता है। जो यजमान यज्ञ में हविष्य छोड़ता है (त्वा) उसको (कस्मै) किस प्रयोजन के लिए अग्नि में (विमुञ्चति) छोड़ता है (तस्मै) जिससे सब सुख प्राप्त हो तथा (पोषाय) पुष्टि आदि गुण के लिए (त्वा) उस हविष्य को (विमुञ्चति) छोड़ता है। जो पदार्थ यज्ञ में सबके सुख के लिए नहीं युक्त किया जाना वह (रक्षसाम्) दुष्ट प्राणियों का (भाग:) अंश (असि) होता है।

यज्ञ के द्वारा पवित्र सुगंधित वृष्टि जल की प्राप्ति भी होती है।

द्योरासीत्पूर्वचित्तिरश्वऽ आसीद् **(क्रमशः)**

ईश्वर तथा वेद

ले.-उमेश चन्द्र वैदिक प्रवक्ता, 13, पुरानी ईदगाह कॉलोनी, आगरा

ईश्वर और वेद का आपस में घनिष्ठ सम्बन्ध है। ऋषि दयानन्दानुसार वेद ईश्वरीय ज्ञान-विज्ञान की वाणी है, जो सृष्टि के प्रारम्भ में सर्वज्ञ, सर्वव्यापी एवं सर्वान्तर्यामी परमात्मा ने चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य, अङ्गिरा के ज्ञान रूपी हृदयाकाश में ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद के रूप में प्रकाशित किये। प्रमाण स्वरूप-

''तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।।''

-यजु. 31.7

अर्थात् उस परम पूज्य, सर्वोपास्य परमात्मा से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद प्रकट हुये हैं।

वेद ज्ञान ही सृष्टि के आदि में उपलब्ध हुआ है। इससे पूर्व कोई ज्ञान नहीं था। यही नित्य ज्ञान-विज्ञान है। यह सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक ज्ञान है। इसमें किसी राजा-रानी की कथा या जादू-टोना की बात नहीं है। इस वेद ज्ञान से ही मनुष्यों ने सब कुछ सीखा जैसे कि कहा है-

''अनादि निधाना नित्या वागुत्सृष्टा स्वयम्भुवा।
आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वाः प्रवृत्तयः।।''

-महाभारत शा.प. 233.24

अर्थात् सृष्टि के आदि में सर्वज्ञ एवं स्वयंभू परमात्मा ने वेदवाणी प्रकट की है। यह वेद वाणी अनादि, अमर, शाश्वत, नित्य, नाश रहित व दिव्य है, इससे ही सब प्रवृत्तियों का प्रकाश हुआ है।

नाश रहित अनादि ज्ञान वेद को अथर्ववेद में ईश्वर का काव्य कहा गया है-

''देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति।''

अथर्व. 10.8.32

अर्थात् उस परमात्मा देव के काव्य को देखो, जो न कभी मरता है, न कभी पुराना होता है अर्थात् सदैव उपयोगी है।

ऋषि कपिल ने भी वेद के विषय में कहा है-

''निजशक्त्यभिव्यक्तेः स्वतः प्रामाण्यम्।''

सा.द. 5.51

अर्थात् परमात्मा की स्वभाविक शक्ति से प्रकट होने के कारण वेद स्वतः प्रमाण हैं। उपरोक्त सूत्र से यह विदित होता है कि ऋषि कपिल भी सा.द. में ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करते हैं। ऋषि दयानन्द ने कपिल ऋषि को नास्तिक नहीं माना है।

वेद व श्रुति की परिभाषा करते हुये ऋषि दयानन्द लिखते हैं-

''विदन्ति जानन्ति, विद्यन्ते भवन्ति, विन्दन्ति विन्दन्ते लभन्ते, विन्दते विचारयन्ति सर्वे मनुष्याः सर्वाः सत्य विद्या यैर्येषु वा तथा विद्वांसश्च भवन्ति ते वेदः।''

ऋग्वेदादि भा. भू. वेदोत्पत्ति पृ. 20

अर्थात् सारी विद्यायें जिससे जानते हैं, जिसमें हैं अथवा ईश्वर को जिसके द्वारा प्राप्त किया जाता है और उत्तम विचार आते हैं, जिससे सभी मनुष्यों को सभी विद्याओं का ज्ञान होता है, व विद्वान् होते हैं, उसे वेद कहते हैं। इस कारण ही ऋषि दयानन्द को 'वेदोद्धारक' के रूप में जाना जाता है। ऋषि के आने से पूर्व वेद तो थे, लेकिन लोग मन्त्रों के पवित्र ईश्वरीय अर्थ को नहीं जानते थे।

ईश्वरीय ज्ञान वेद से ही परम पिता परमात्मा के स्वरूप का प्रकटीकरण होता है कि वह पवित्र, नित्य और निराकार है अर्थात् पंच तत्त्वों से बना साकार शरीर रूप नहीं है। वह चेतन शक्ति के रूप में हैं। इस कारण वह इन नेत्रों से देखने का विषय नहीं है। नेत्र रूप देखते हैं। रूप आकार में होता है। परमात्मा आकार रहित है इसलिए यह भौतिक नेत्रज्योति से दिखलाई न देकर ज्ञान चक्षुओं से अनुभव किया जाता है। प्रमाण स्वरूप-

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रण-मस्नाविरँ शुद्धमपाप विद्धम्।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्य तोऽर्थान्
व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः।।-यजु. 40/8

पदार्थ-(सः) वह (परि) सर्वत्र (अगात्) विद्यमान (शुक्रम्) शीघ्रकारी परम तेजोमय (अकायम्) शरीर से रहित (कविः) ज्ञानी, सर्व पदार्थों का देखने वाला (परिभूः) सबसे बढ़कर, हर जगह रहने वाला (स्वयम्भूः) अपनी सत्ता के लिए दूसरों की अपेक्षा न रखने वाला (याथातथ्यतः) ठीक-ठीक (अर्थान्) पदार्थों का (वि) विशेष रीति से (अदधात्) विधान करता है। (शाश्वतीभ्यः) सनातन, सदैव विद्यमान रहने वाली (समाभ्यः) प्रजा के लिए।

भावार्थः वह परमेश्वर सर्वत्र व्यापक, अनन्त शक्तिवाला, अजन्मा, निराकार, अक्षत, बन्धन रहित, निर्मल, पाप रहित, सूक्ष्मदर्शी, ज्ञानवान् सर्वोपरि महान् सत्ता है। स्वयं ही अपना स्वामी है। अपनी सदैव वर्तमान रहने वाली प्रजा के लिए वह ठीक-ठीक यथायोग्य विधान करता है।

उपरोक्त मन्त्र में परमात्मा का जैसा यथार्थ वर्णन हुआ है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। संसार के सभी मतवादी यदि इस मन्त्र को भली प्रकार समझ लें तो ईश्वर सम्बन्धी अन्धविश्वासों एवं भ्रान्तियों का निवारण होकर सभी मतमतान्तरों के झगड़े समाप्त हो सकते हैं।

शरीरधारी ईश्वर कभी सर्वव्यापी नहीं हो सकता। वह एक देशीय ही रहेगा। वेद में अन्यत्र भी कहा है कि ईश्वर सर्वव्यापी है-

''ईशावास्यमिदं सर्व यत्किञ्च जगत्यां जगत्।'' यजु. 40/1

अर्थात् इस सृष्टि में हर पदार्थ ईश्वर से आच्छादित है, वह सर्वव्यापक है। एक अन्य स्थान पर कहा गया है-

अर्थात् इस सृष्टि में हर पदार्थ ईश्वर से आच्छादित है, वह सर्वव्यापक है। एक अन्य स्थान पर कहा गया है-

''अन्ति सन्तं न जहाति अन्ति सन्तं न पश्यति''।

-अथर्व. 18/8/32

अर्थात् परमात्मा इतना समीप है कि वह दिखलाई भी नहीं देता, न ही उसे छोड़ सकते हैं। कारण यह है कि वह अन्तर्यामी होने से आत्मा में भी व्याप्त है, तो आप उसे आत्मा में से निकाल कर कैसे अलग कर सकते हैं? आत्मा और परमात्मा का सम्बन्ध व्याप्य और व्यापक का है।

परमात्मा ही जीवों को उनके कर्मानुसार शरीर प्रदान करता है, साथ ही मनुष्यों को कर्म करने का उपदेश भी करता है-

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।-यजु. 40/2

हे आत्मरूप मनुष्य! इस संसार में कर्मों को करते हुए ही सौ वर्ष जीने की इच्छा रख, इस प्रकार धर्मयुक्त कर्म करने पर तुझ मनुष्य में किया हुआ कर्म लिप्त नहीं होगा, इससे भिन्न कर्म-बन्धन से छूटने का मार्ग नहीं है।

मन्त्र के सन्देश-

मन्त्र में परमात्मा मनुष्य को जानने योग्य 5 तत्त्वों का सन्देश देते हैं-

1. कर्म शाश्वतिक हैं, उनसे छूटा नहीं जा सकता।

2. कर्म करते हुए ही जीवन की सार्थकता है।

3. सौ वर्ष जीना मनुष्य का नैसर्गिक अधिकार है।

4. धर्मचिरण ही मनुष्य को पाप कर्म से बचाता है।

5. कर्म तो करना है, पर उससे लिप्त नहीं होना है।

उपरोक्त मन्त्र के पाँचों उपदेश जीवों के कर्ममय अस्तित्व के प्रति पादक हैं। कर्म प्रवाह से अनादि हैं। हमारे कर्म ही सुख-दुख के आधार हैं।

ईश्वर न्यायकारी और दयालु है, वह कर्मों का फल कर्त्ता को अवश्य देता है, क्षमा नहीं करता है। सर्वव्यापक-सर्वान्तर्यामी होने से सभी के कर्मों को जानता है। वेद में स्वयं परमात्मा उपदेश करते हैं-

न किल्वषमत्र नाधारो अस्ति यन्मित्रैः सममान एति।
अनूनं पात्रं निहितं न एतत्पक्तारं पक्वः पुनराविशाति।।

अथर्व. 12.3.48

इस मन्त्र में कर्मफल का बहुत सुन्दर चित्र खींचा गया है, कर्म के फल से कर्ता बच नहीं सकता। जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है पर भोगने में परतन्त्र है। भला या बुरा कर्म कारण है, तदनुसार फल कार्य है।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

पृष्ठ 2 का शेष-उच्छिष्ट ब्रह्म एवं वेद का प्रलय विज्ञान

यजुषा सह।

उच्छिष्टाज्जज्ञिरे सर्वे दिवि देवा दिविश्रितः।।

अथर्व. 11/7/24।।

अर्थात् पुराणम्=सर्वदा नया रहने वाला ज्ञान (पुराणं कस्मात्? पुरा नवं भवति, निरु. (3/4/19), ऋचः = ऋग्वेद, सामानि=सामवेद, छन्दांसि= अथर्ववेद, यजुषा= यजुर्वेदात्मक ज्ञान, उच्छिष्टात्= प्रलयकाल में अपने स्वरूप में स्थित परमेश्वर से, जज्ञिरे=उत्पन्न होते हैं, सर्वे देवाः= एवं सभी देव, दिवि= जो द्यौलोक में रहते हैं एवं दिविश्रितः= द्यौलोक जिनका आश्रयण है, वे सभी पदार्थ उच्छिष्ट परमेश्वर से ही उत्पन्न होते हैं।

तात्पर्य हुआ उच्छिष्ट परमेश्वर प्रलय के पश्चात् पूर्व सृष्टि के समान चारों वेदों के ज्ञान को प्रदान करता है।

वेद का अद्भुत विज्ञान

प्रायः यह समझ लिया जाता है कि प्रलय के पश्चात् पदार्थ नष्ट हो जाता हैं, पर व नष्ट नहीं होते, अपने मूल कारण में विद्यमान रहते हुये परमेश्वर में स्थित रहते हैं। परमेश्वर के इस विशिष्ट कार्य के कारण ही उसका नाम उच्छिष्ट पड़ा।

यहाँ यह भी विशिष्ट ध्यातव्य है कि कोई भी पदार्थ उच्छिष्ट नामा परमेश्वर में लीन नहीं होते, सबकी स्वतन्त्र सत्ता रहती है। यह वेद का अद्भुत विज्ञान है।

इस प्रकार अथर्ववेद के 11वें काण्ड के 7वें सूक्त से सुज्ञात है, उच्छिष्ट= प्रलयकालीन सभी जड़, चेतन पदार्थों को आश्रय देने वाला, उनको अपने स्वरूप से ठीक रखने वाला परमेश्वर सभी सुखों एवं समृद्धियों का मूल है। चित्तवृत्तियों की उत्तमता एवं मानसिक हर्षों का देने वाला है। वह ही सभी देवों, सभी लोकों का आश्रय है।

ऐसे विशिष्ट ज्ञान वाले, विशिष्ट कर्म वाले उच्छिष्ट ब्रह्म को जानना अति आवश्यक है। सुख, समृद्धि के निमित्त उच्छिष्ट ब्रह्म को जो जान लेता है, वह समस्त हर्षों से भर जाता है, समस्त वृद्धियों को प्राप्त कर लेता है।

पृष्ठ 8 का शेष-आर्य समाज फरीदकोट...

कार्यक्रम आरम्भ हुआ। ध्वजारोहण श्री सरदारी लाल जी आर्य सभा उप प्रधान, श्री प्रेम भारद्वाज जी महामंत्री एवं श्री सुधीर शर्मा जी सभा कोषाध्यक्ष जी ने संयुक्त रूप से अपने कर-कमलों से किया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी के पश्चात आर्य समाज के कार्यों को जिन लोगों ने आगे बढ़ाया उनमें श्रद्धानन्द जी का नाम बहुत ही आदर के साथ लिया जाता है। स्वामी श्रद्धानन्द वास्तव में श्रद्धा के प्रतीक थे। उन्होंने जो संकल्प लिया उसे श्रद्धा के साथ पूरा करने के लिए अपने आपको न्यौछावर कर दिया। समर्पण एवं त्याग के साथ उन्होंने महर्षि दयानन्द के कार्यों को आगे बढाया। त्याग एवं समर्पण की भावना का ज्वलन्त उदाहरण स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने जीवन से प्रस्तुत किया। स्वामी श्रद्धानन्द जी जब लाला मुन्शीराम के रूप में आर्य समाज के कार्यक्षेत्र में उतरे तो बड़े से बड़ा त्याग करने और बलिदान देने से पीछे नहीं हटे। इसी समर्पण एवं श्रद्धा के कारण उन्हें महात्मा मुन्शीराम के रूप में लोग जानने लगे तथा सन्यास के पश्चात स्वामी श्रद्धानन्द नाम धारण किया। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का कार्यक्षेत्र हमेशा से ही श्रद्धा और विश्वास पर आधारित रहा है। इस सम्मेलन को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उप प्रधान श्री सरदारी लाल जी आर्य ने भी सम्बोधित किया। आर्य समाज के पदाधिकारियों ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के पदाधिकारियों को सम्मानित किया। अंत में आर्य समाज के प्रधान श्री यशपाल जी ने सभी विद्वानों का और उपस्थित आर्यजनों का धन्यवाद किया। आर्य समाज के सभी सदस्यों ने इस कार्यक्रम में अपना भरपूर सहयोग दिया। इस अवसर पर श्री सुधीर शर्मा जी सभा कोषाध्यक्ष, श्री सुदेश कुमार जी सभा मंत्री भी उपस्थित थे। आर्य समाज भार्गव नगर, आर्य समाज माडल हाउस, आर्य समाज बस्ती बाबा खैल, आर्य समाज बस्ती गुजां, आर्य समाज महर्षि दयानन्द चौक गढ़ा, आर्य समाज गांधी नगर-1, आर्य समाज गांधी नगर-2, आर्य समाज मेन बाजार बस्ती दानिशमंदा, आर्य समाज संत नगर के भी कई आर्य जन इस अवसर पर उपस्थित थे। आर्य समाज के संरक्षक श्री पूर्ण चंद जी, महामंत्री श्री कमल भारती जी, उप प्रधान श्री रमेश भगत जी, कोषाध्यक्ष श्री केवल कृष्ण जी, उप मंत्री श्री पवन कुमार जी ने भी इस कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना पूरा सहयोग दिया। शांति पाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया। सभी आर्यजनों ने ऋषि लंगर ग्रहण किया।

यशपाल आर्य
प्रधान आर्य समाज बस्ती दानिशमंदा

पृष्ठ 5 का शेष-ईश्वर तथा वेद

परमेश्वर सृष्टि का रचयिता भी है-

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमांकस्मै देवाय हविषा विधेम।।-यजु. 13/4

यह यजुर्वेद का मन्त्र है। इसमें सृष्टि रचना करने वाले परमेश्वर का वर्णन है।

ऋषिवर दयानन्द सरस्वती इस मन्त्र का सत्यार्थ प्रकाश में अर्थ इस प्रकार करते हैं कि-"हे मनुष्यो! जो सब सूर्यादि पदार्थों का आधार और जो यह जगत् हुआ है और होगा उसका एक अद्वितीय पति परमात्मा इस जगत् में उत्पत्ति के पूर्व विद्यमान था और जिसने पृथिवी से लेके सूर्य पर्यन्त जगत् को उत्पन्न किया है। उस परमात्मा देव की प्रेम से भक्ति किया करें।"

वेद के उपरोक्त मन्त्रों के आधार पर ही आर्य समाज के नियमों में द्वितीय और तृतीय नियम बनाये गए।

द्वितीय नियम-"ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार अनादि अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

तृतीय नियमः वेद सब सत्य-विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है।

संक्षेप में कह सकते हैं कि परमेश्वर सृष्टि का रचयिता, पालनकर्त्ता एवं संहारकर्त्ता है। सभी जीवों के कर्मों का द्रष्टा और फल प्रदाता है। सर्गारम्भ में सभी जीवों के कल्याण हेतु वेद ज्ञान का प्रकाश करता है।

जैसे परमात्मा गुण, कर्म-स्वभाव से नित्य और पवित्र है वैसे ही उसका वेद ज्ञान भी नित्य और पवित्र है।

पृष्ठ 8 का शेष-आर्य समाज नंगल...

श्री सुरेश कुमार शास्त्री जी ने सर्वस्व त्यागी स्वामी श्रद्धानंद जी की जीवन गाथा का व्याख्यान बड़े ही सरल शब्दों में किया। उन्होंने बताया कि स्वामी श्रद्धानंद जी द्वारा किया गया प्रत्येक कार्य समाज एवं देशहित के लिये था। वे सम्पूर्ण क्रान्ति के प्रतीक थे। वीरता बलिदान उनके रोम-रोम में कूट कूट कर भरी थी। उन्होंने बताया कि स्वामी जी ने समाज के कल्याण हेतु अपनी संस्कृति और सभ्यता को बचाने हेतु गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की। लार्ड मैकाले की शिक्षा नीति को चुनौती दी। सबसे पहले कन्याओं के लिये शिखा के लिये कन्या महाविद्यालय की स्थापना की। शुद्धि आन्दोलन से किसी कारणवंश मुस्लिम धर्म में गये हिन्दू भाइयों को वापिस वैदिक धर्म के अनुयायी बनाया। उनके गुरुकुल कांगड़ी से अनेकों विद्वान, देशभक्त बलिदानी तैयार हुये। सिखों के द्वारा चलाये गये सत्याग्रह को अपने हाथों में लेकर प्रथम सत्याग्रही के रूप में प्रस्तुत हुये और अंग्रेजी सरकार द्वारा गिरफ्तार किये गये। महात्मा गांधी जी द्वारा चलाये गये असहयोग आन्दोलन में स्वामी जी ने सक्रिय भाग लिया। अमृतसर के जलियांवाले बाग की घटना को देखकर स्वामी जी ने कांग्रेस का अधिवेशन बुलाया और उसके प्रथम अध्यक्ष बने और अपना भाषण हिन्दी में पढ़ा।

अंत में आर्य समाज नंगल के वयोवृद्ध सभासद श्री आसकरण दास सरदाना जी ने भी स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती जी की जीवन की अलग अलग घटनाओं पर प्रकाश डाला। आर्य समाज के प्रधान सतीश अरोडा जी ने कहा कि स्वामी जी ने अपना पूरा जीवन देश, धर्म और जाति के लिये बलिदान किया। स्वामी जी द्वारा राष्ट्रहित में तथा धर्म एवं मानवता के लियेे किये गये कार्यों को हमेशा याद किया जायेगा।

इस अवसर पर नगर के गणमान्य अतिथि श्री ओ.पी.खन्ना, कर्ण खन्ना, राजीव खन्ना, राजी खन्ना, अशोक भाटिया जी, विमला भाटिया, पंकज खन्ना, मीनाक्षी खन्ना प्रधाना स्त्री आर्य समाज, डा. बनारसी दास, मदन लाल सिकरी, पूनम खन्ना, आशा अरोडा, माता कान्ता भारद्वाज, हरेन्द्र भारद्वाज, अभिषेक खन्ना, दीसिं खन्ना, डा. प्रदीप गुलाटी, श्री एवं श्रीमती मनमोहन जी, देसरंजन शर्मा, सविता शर्मा, भारत शर्मा, महीप जौली, श्री सतपाल हरीश, दीवान चंद शर्मा, मंजुल शर्मा ने उपस्थित होकर पर्व की शोभा को बढ़ाया। तत्पश्चात ऋषि लंगर का वितरण किया गया।

-सतीश अरोडा प्रधान आर्य समाज

हमारे दादा गुरु स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी

हम में से बहुत से आर्यजन त्याग की साक्षात मूर्ति पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द सरस्वती जी महाराज के जीवन के बारे अच्छी तरह जानते होंगे उनकी दिनचर्या, खान-पान, रहन-सहन, सादगी उनके मुंह से निकला हुआ एक-एक शब्द हम सब के लिये प्रेरणादायक होता था या ज्यूं कहें कि जिस प्रकार मिशरी की डली को किसी भी तरफ से चाटें वो मीठी ही होगी। इसी प्रकार उनका जीवन था। आर्य जगत के उच्च कोटि के संन्यासियों में उनका नाम था। उनके जीवन का एक -एक क्षण हमारे लिये प्रेरणा से भरा हुआ था।

स्वामी जी महाराज अपने प्रवचन में कहा करते थे कि मैंने अपने जीवन में सेवा की है। उनके जीवन का एक ही लक्ष्य था सेवा करना। गरीब की सहायता करना, विद्वान का सत्कार करना, रोगियों की सेवा करना तथा गाय की सेवा उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य था। व सारी आयु नाम, सम्मान, पद प्रतिष्ठा, लोभ-मोह लालच से कोसों दूर रहे। जो भी स्वामी जी के सम्पर्क में आया, वह उनसे पूरी तरह से प्रभावित रहा। स्वामी जी इतना आदर मान सम्मान देते थे वो आदमी सोचने में मजबूर हो जाता था कि शायद स्वामी सबसे ज्यादा स्नेह मेरे साथ ही करते हैं। आप अनुमान लगा सकते है जब स्वामी सर्वानन्द जी का जीवन इतना पवित्र था तो उनके गुरु का जीवन कितना पवित्र होगा। स्वामी सर्वानन्द जी कहा करते थे कि महर्षि दयानन्द के बाद ऐसा बलवान, विद्वान, तपोनिष्ठ, दृढ़ संकल्पी, योद्धा संन्यासी मैंने ज़िन्दगी में नहीं देखा। बड़े स्वामी जी की अपने गुरु के प्रति पूरी अगाध श्रद्धा थी।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी श्रेष्ठ आर्य संन्यासी थे। वे लौकेषणो, युगेष्णा, वितेष्णा से कोसों दूर थे। एक बार की घटना है कि स्वामी जी हैदराबाद का सत्याग्रह पर विजय प्राप्त करके दिल्ली पधारे। सेठ जुगल किशोर बिड़ला स्वामी जी के प्रेमी भक्त थे। सेठ जी ने स्वामी जी के शिष्य पं. रूचिराम जी से कहा ''स्वामी जी महाराज से मेरी ओर से वेनती करना कि एक समय मेरे यहां भोजन करें। पंडित जी के आग्रह से स्वामी जी मान गये। फिर स्वामी जी को कहीं से पता चल गया कि शायद विड़ला स्वामी जी को नोटों का थाल भेंट करना चाहते हैं। जो स्वामी जी ने तुरन्त उनके भोजन का निमन्त्रण अस्वीकार कर दिया और सन्देश भिजवा दिया कि दक्षिणा वाले साधु को ढूंढ कर भोजन करवा दें। हमें आप की दक्षिणा का कोई लोभ नहीं।

आज के संन्यासी भोजन ही वहां पर करते हैं जहां दक्षिणा ज्यादा से ज्यादा मिले। किसी आर्य समाज के वार्षिक उत्सव पर जाना हो तो पहले दक्षिणा निर्धारित की जाती है। रेल की First Class की टिकट चाहते हैं। लेकिन स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी इन सभी प्रलोभनों से कोसों दूर थे। 10 जनवरी 2020 दिन शुक्रवार को दयानन्द मठ दीनानगर जिला गुरदासपुर पंजाब में स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का जन्म बड़े उत्साह के साथ मनाया जा रहा है सभी आर्य बन्धुओं से प्रार्थना है कि ज्यादा से ज्यादा संख्या में पहुंचा कर उस महापुरुष का जन्मदिन मनायें तथा उनके जीवन से प्रेरणा करें।

ले.-मन्त्री जोगिन्द्रपाल आर्य समाज धारीवाल

''लौह पुरूष फील्ड मार्शल स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी

ईश्वर ने भारत की पवित्र धरती पर युग प्रवर्तक महर्षि देव दयानन्द सरस्वती जैसे महान समाज सुधारक, क्रान्तिकारी महापुरुष को जन्म देकर इस गौरवान्वित किया है। भारत के पंजाब प्रान्त को यह गौरव प्राप्त है कि इस धरती पर हजारों देश भक्त, विद्वान व दार्शनिक पैदा किये हैं। पंजाब के जिला लुधियाना को यह गौरव प्राप्त है कि इस जिले की पवित्र धरती पर स्वाधीनता संग्राम के यशस्वी सेनापति लाला लाजपत राय को जन्म देने का गौरव प्राप्त है।

स्वाधीनता संग्राम के औजस्वी वक्ता पूज्य स्वामी सत्यदेव परिव्राजक का जन्म भी इसी जिले में हुआ था। बहुत उच्चकोटि के दार्शनिक विद्वान स्वामी दर्शनानन्द जो जन्म देने का गौरव भी इसी जिले को प्राप्त है। आर्य समाज के मूर्धन्य, निर्भीक संन्यासी पूज्यवाद लौह पुरूष, फील्ड मार्शल स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का जन्म भी लुधियाना जिले के छोटे से गांव मोही में पौष मास की पूर्णमासी को हुआ था। आपके पिता का नाम भगवान सिंह था जो सेना के उच्चाधिकारी थे। स्वामी जी के बचपन का नाम केहर सिंह था। वास्तव में स्वामी जी ने अपने बचपन के नाम को सार्थिक करके दिखाया जो सारी आयु में कभी झुके नहीं, रूके नहीं, थके नहीं।

स्वामी जी के प्रवचन करने की कला बहुत ही आसान हुआ करती थे जो श्रोताओं को असानी से समझ आ जाती थी। गृहस्थियों के परिवारों में अक्सर उपदेश देते हुये कहा करते थे कि गृहस्थियों यदि अपने परिवारों में सुख शान्ति लाना चाहते हो तो चार बातें अपने लड़ बांध लो अर्थात् अमल कर लो तो आपका परिवार सुखमय बन जायेगा, वो बातें थी, रैहणी, बैहणी, कैहणी और सहणी।

महामन्त्री शास्त्री जोगिन्द्रपाल आर्य समाज धारीवाल

पृष्ठ 1 का शेष-ऋषि दयानन्द का संदेश वेदों का प्रचार...

उप प्रधान श्री मुनीष सहगल, कार्यालयाध्यक्ष श्री जोगिन्द्र सिंह, जुगल किशोर गुप्ता जी उपस्थित हुये। आर्य महासम्मेलन में मुख्य वक्ता के रूप में श्री जया आर्या जी ने अपने विचार में कहा कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है इसे सभी दुनिया ने माना है। सबसे अगर कोई पुराना ग्रंथ है तो वह ऋग्वेद है इसलिये हमें वेदों की ओर लौटना होगा। वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उप प्रधान श्री स्वतंत्र कुमार जी ने कहा कि स्वामी दयानन्द जी ने दंडी गुरु विरजानन्द जी से शिक्षा ली और उनके गुरू विरजानन्द जी ने स्वामी दयानन्द जी को आदेश दिया कि दुनिया वेदों को भूल चुकी है और उन्होंने वेदों का प्रचार प्रसार किया। जब से सृष्टि हुई है तब से वेद है इसलिये वेद ही हमारे जीवन का आधार है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी ने कहा कि वेद तो मानव कल्याण के लिये हैं किसी व्यक्ति विशेष के लिये नहीं है। श्री रोशन लाल आर्य ने अपने सम्बोधन में कहा कि आर्य समाज त्रैतवाद को मानता है अर्थात् प्रकृति जिससे परमात्मा ने संसार को बनाया है और परमात्मा ने वेद मंत्रों के माध्यम से ही ईश्वर सर्वव्यापक है चेतन और जड़ वस्तुओं के कण कण में समाया हुआ है। हम जो कुछ करते हैं केवल शरीर के लिये करते हैं क्योंकि शरीर एक दिन नष्ट होने वाला है किन्तु आत्मा जिसके कारण मानव जीवन है इसे हम भुलाए बैठे हैं। ईश्वर एक साक्षात करना है दूसरों को करवाना है। हरिद्वार से डाक्टर सरिता आर्या ने वेदों के बारे में सुन्दर व्याख्या की।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी ने कहा कि आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर का वार्षिकोत्सव विशाल महायज्ञ से हुआ है। यह आर्य समाज बहुत ही सराहनीय कार्य कर रही है। आर्य समाज के प्रधान श्री रणजीत आर्य और महामंत्री हर्ष लखनपाल और सभी सदस्य जिस ढंग से आर्य समाज का प्रचार प्रसार कर रहे हैं उनसे सभी को शिक्षा लेनी चाहिये। वेदों का और आर्य समाज व स्वामी दयानन्द का संदेश आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर घर घर पहुंचा रही है। आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर प्रत्येक रविवार को नया यजमान यज्ञवेदी पर बैठा कर बहुत ही सराहनीय कार्य कर रही है। यह आर्य समाज झुग्गी झोंपडी में रहने वाले बच्चों को सायंकाल में ट्यूशन वर्क करा कर शिक्षा का प्रकाश दे रही है। यह बहुत ही पुण्य का कार्य कर रही है। आर्य समाज के महामंत्री ने मंच का संचालन बहुत ही सुचारू रूप से किया। इस अवसर पर आर्य समाज के प्रधान श्री रणजीत आर्य ने सभी का आभार प्रकट किया और कहा कि ऋषि दयानन्द के बताये मार्ग पर चलते हुये वेद का प्रचार प्रसार हम कर रहे है। इस अवसर पर सभी अतिथियों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर सुरेन्द्र कालिया डीआईजी, श्रीमती किरण कालिया, सुभाष आर्य, इन्दु आर्य, निशांत बसंदराय, सुदर्शन आर्य, शिखा आर्य, हरिन्द्र सिंह बेदी, रविन्द्र कौर बेदी, रोहित अग्रवाल, अर्चना अग्रवाल, स्वतंत्र कुमार मुरगई, प्रमोद बसंदराय, नीरज चड्ढा, सिम्मी चड्ढा, सुशील विक्की कालिया पार्षद, सतपाल मल्होत्रा, ईश्वर चन्द्र रामपाल, चौधरी हरी चंद, विजय कुमार चावला, सुरेन्द्र अरोडा, भारत भूषण नंदा, मीनाक्षी नंदा, मनजीत सिंह सैनी, नेतिका सेनी, जागृति विवेक छाबड़ा, ममता, अशोक कुमार धीर, उषा रानी, राजीव शर्मा, रीना शर्मा, केवल कृष्ण चोपडा, शीला रानी चोपड़ा, एन.के.रिखी, मीनू शर्मा, विमला रानी, राज कुमार, रसिक वर्मा, नेहा वर्मा, केशव कालड़ा, तनवी कालड़ा, रजनी गौरव आर्य, दीपक सूरी, बबीता सूरी, उमा शर्मा, उर्मिला भगत, सविता बाबा, राकेश बाबा, बलवन्त सिंह आरती, ललित मोहन कालिया, स्नेहलता कालिया, संदीप अरोडा, गीतिका अरोडा, सुमित भाटिया, लक्ष्मी भाटिया, धर्मेन्द्र मिश्रा, हरीश कुमार, किरण, रविन्द्र चावला, रेणु, कुमत बंसल, सुनीत मनप्रीत सिंह, मधु, दिनेश कुमार, विवेक रजनी, कमलेश रानी, सुरेन्द्र अग्रवाल, लखवीर सिंह लक्खा, बलजीत कौर, कमलजीत सिंह, हरनीत कौर, ओम गंगोत्रा, मोनिका गंगोत्रा, राजेन्द्र शर्मा, भारती शर्मा, अश्विनी शर्मा, कमला शर्मा, निष्पक्ष सरीन, शेफाली अरोडा, जगदीश कुमार, नीलम रानी, रोहण किरण गोयल, राकेश कुमार वीणा, धर्मवीर गीता रानी, साक्षी अरोडा, राजीव शर्मा, रीना शर्मा, देवराज, राजरानी, स्वर्ण कुमारी, सुरेश ठाकुर, अनुपमा ठाकुर, अर्चना मिश्रा, नीलम मिश्रा, रीतिका मिश्रा, वेद प्रकाश, सुनीता रानी, राज कुमार, रीना रानी, सत्येन्द्र तलवार, नंदिनी, अमन सूद, सोनिया सूद, सुदेश कुमार, रेणु, प्रेमलता, जोगेन्द्र भंडारी, सुदेश भंडारी, देवेन्द्र शर्मा, कृष्ण चंद्र बसंदराय, प्रमोद बसंदराय, अशोक बसंदराय, सुरेन्द्र खन्ना, रीवा खन्ना, कुमार गौरव, ईशा वोहरा, चन्द्रकांत नाथुला, विशाल, ओम मल्होत्रा, राघव मल्होत्रा, विमला मित्तल, आर.के.सेठ, मोहन लाल, मनु आर्य, अमन कपूर, ईशा कपूर, राकेश कुमार, रजनी, हिमांशु, कृष्णा देवी, विमला देवी, डालिया शर्मा, आर्यमित्र गुप्ता, नीलम गुप्ता, कुसुम शर्मा, प्रवीण शर्मा, धर्मपाल शर्मा, राजेश वर्मा, सपना वर्मा, पुलकित मुरगई, चारू मुरगई, महेश वर्मा, रविन्द्र कुमार, प्रकाश शास्त्री, डा. अमित शर्मा, रितिका शर्मा, राज सेठ, नवीन चावला और विशेष सहयोगी संस्थाओं के प्रतिनिधि इसमें उपस्थित हुये।

-हर्ष लखनपाल मंत्री आर्य समाज

वर्ष 2020 के नए कैलेण्डर मंगवाए

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.), चौक किशनपुरा जालन्धर द्वारा प्रति वर्ष हजारों की संख्या में नव वर्ष के कैलेण्डर महर्षि दयानन्द के चित्र के साथ देसी तिथियों सहित छपवाए जाते हैं। गत कई वर्षों से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर आर्य जनता को उपलब्ध करवा रही है। इसी प्रकार सन् 2020 के महर्षि दयानन्द सरस्वती के चित्र वाले कैलेण्डर भी आधे मूल्य पर आर्य जनता को दिए जाएंगे। पिछले वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी कैलेण्डर का मूल्य छह रुपये प्रति तथा 600 रुपए सैकड़ा रखा गया है। इसलिये सभी आर्य समाजें, शिक्षण संस्थाएं व आर्य बन्धु शीघ्र अति शीघ्र कैलेण्डर सभा कार्यालय से मंगवा कर अपने सदस्यों व इष्ट मित्रों में वितरित करें। कार्यालय का समय प्रातः 10.00 बजे से सायं 5.00 बजे तक है। रविवार को अवकाश रहता है इसलिये समय पर अपना व्यक्ति भेज कर कैलेण्डर मंगवाएं।

प्रेम भारद्वाज
सभा महामंत्री

आर्य समाज बस्ती दानिशमंदा का 40वां वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज वेद मंदिर बस्ती दानिशमंदा जालन्धर का वार्षिक उत्सव 15 दिसम्बर से 22 दिसम्बर 2019 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर आर्य समाज के अधिकारी सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी, कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा जी, सभा उप प्रधान श्री सरदारी लाल जी को सम्मानित करते हुये जबकि चित्र चार में आर्य समाज के अधिकारी व अन्य आर्यजन हवन यज्ञ करते हुये।

आर्य समाज वेद मंदिर बस्ती दानिशमंदा जालन्धर का 40वां वार्षिक उत्सव बड़ी धूमधाम से दिनांक 15 दिसम्बर से 22 दिसम्बर 2019 तक मनाया गया जिसमें 15 दिसम्बर से प्रभात फेरियों का आयोजन किया गया। पहली प्रभात फेरी श्री सोमनाथ एवं जगदीश जी के परिवार भार्गव नगर जालन्धर के सहयोग से निकाली गई तथा पारिवारिक सत्संग किया गया। उन्होंने प्रभात फेरी का अच्छी तरह से स्वागत किया और आए हुये महानुभावों को प्रसाद वितरित किया गया और इसके साथ ही अलग अलग परिवारों में प्रभात फेरी की गई।

इसी तरह 19 दिसम्बर से 21 दिसम्बर तक रात्रि 8.00 बजे से 9.30 बजे तक भजन श्री सुरिन्द्र आर्य बस्ती बाबा खेल और प्रवचन श्री विजय कुमार शास्त्री व श्री सुशील शर्मा के हुये। श्री विजय शास्त्री जी ने अपने प्रवचनों में स्वामी दयानन्द जी के जीवन पर प्रभावशाली प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी सरस्वती स्वलिखित अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में मनुष्य जीवन से सम्बन्धित अनेक दृष्टिकोणों पर सार्थक विवेचन किया है। ईश्वर का स्वरूप क्या है, शिक्षा पद्धति कैसी होनी चहिए, माता-पिता का सन्तान के प्रति क्या कर्त्तव्य है, मनुष्य मुक्ति कैसे प्राप्त कर सकता है? इसी के अन्तर्गत महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के दशमें समुल्लास में आचार एवं अनाचार विषय को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि अब जो धर्मयुक्त कामों का आचरण, सुशीलता, सत्पुरूषों का संग और सद्विद्या के ग्रहण में रूचि आदि आचार और इनके विपरीत अनाचार कहाता है। मुख्य कार्यक्रम 22 दिसम्बर को प्रात: 10.00 से 11.00 बजे तक हवन यज्ञ से प्रारम्भ किया गया। जिसके ब्रह्मा श्री विजय कुमार शास्त्री व पंडित मनोहर लाल जी थे। मुख्य यजमान श्री हरि प्रकाश जी एवं श्री निर्मल कुमार जी ने पवित्र वेद मंत्रों से आहुतियां प्रदान की। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी की अध्यक्षता में **(शेष पृष्ठ छ: पर)**

आर्य समाज नंगल में स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस मनाया

आर्य समाज नंगल टाउनशिप में स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर आर्य समाज के सदस्य एवं पदाधिकारी हवन यज्ञ करते हुये जबकि चित्र दो में उपस्थित जनसमूह।

आर्य समाज नंगल के तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती जी का बलिदान दिवस बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रात: 10.00 बजे हवन यज्ञ में श्री सतपाल हरीश जी के सुपुत्र एवं पुत्रवधू मुख्य यजमान के रूप में उपस्थित हुये। पुरोहित श्री कृष्णकांत शर्मा जी ने बड़ी श्रद्धाभाव से मंत्रोच्चारण कर हवन यज्ञ सम्पन्न करवाया। श्री कृष्णकांत शर्मा जी द्वारा स्वामी श्रद्धानंद जी की जीवनी पर आधारित भजन प्रस्तुत किया। इस प्रायोजन के लिये सभा से **(शेष पृष्ठ छ: पर)**

स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की तरफ से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक प्रेम भारद्वाज द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड़ जालन्धर पंजाब से मुद्रित एवं गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से प्रकाशित।
सम्पादक-प्रेम भारद्वाज
पीआरबी एक्ट के तहत प्रकाशित सामग्री के चयन हेतु उत्तरदायी किसी विवाद का न्यायिक क्षेत्र जालन्धर होगा। आर एन आई संख्या 26281/74 **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**